بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-07.04.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विवेक पूर्ण कथनों की रोशनी में क़ुर्आन करीम की श्रेष्टता, महत्ता, स्तर एवं महानता का बयान।

विरोधियों के उपद्रव स सुरक्षित रहने, विश्व की सामान्य स्थिति तथा फ़िलिस्तीन के मुसलमानों के लिए रमज़ानुल मुबारक में दुआओं की तहरीक।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदः 7 अप्रैल 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआलाबिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दीन तथा शरीअत को सम्पूर्ण एवं पूरा किया तो क़ुर्आन करीम में यह घोषणा फ़रमाई- اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا कि आज के दिन मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन पूर्ण कर दिया तथा तुम पर अपनी अनुकम्पा पूरी कर दी तथा मैंने इस्लाम को तुम्हारे लिए पसन्द कर लिया। अतएव यह अल्लाह तआला का मुसलमानों पर अति उपकार है कि उनके लिए एक सम्पूर्ण एवं व्यापक शरीअत प्रदान की। यह दावा केवल इस्लाम का है, किसी अन्य धर्म का नहीं कि अब अन्तिम दीन इस्लाम ही है जो अल्लाह तआला का पसन्दीदा दीन है तथा यदि अल्लाह तआला की प्रसन्नता चाहिए तो इस्लाम को स्वीकार किए बिना, इसकी शिक्षानुसार अमल किए बिना कोई चारा नहीं। अल्लाह तआला यह ऐलान फ़रमा रहा है कि क़ुर्आन की शिक्षा ही है जो अब इंसान की नैतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति का अकेला साधन है बल्कि यह शिक्षा इतनी व्यापक है कि भौतिक प्रगति के रास्तों के लिए भी यही शिक्षा है।

जब अल्लाह तआला इस शिक्षा के सम्बंध में اَكْمَلْتُ की घोषणा फ़रमाता है तो इसका अर्थ यह है कि इंसान की समस्त क्षमताएँ, चाहे वे नैतिक हों, आध्यात्मिक अथवा शारीरिक हां, इनकी प्राप्ति क़ुर्आन करीम पर अमल करने से ही हो सकती है तथा اَتْمَمْتُ कह कर यह घोषणा पूरी शक्ति से फ़रमा दिया कि जो कुछ भी इंसान की आवश्यकताएँ थीं उनको हर दृष्टि से पूरा करने वाला केवल क़ुर्आन करीम ही है, काई ऐसी

आवश्यकता नहीं जिसको क़ुर्आन करीम अपनी परिधि में न लाया हो, वे इंसान की भौतिक आवश्यकताएँ हैं या रूहानी तथा नैतिक स्तरों को प्राप्त करने के साधन एवं रीतियाँ हैं।

इस आयत के साथ ही क़ुर्आन करीम ने यह ऐलान फ़रमा दिया कि अब इंसान का अस्तित्व इस शिक्षा के साथ ही संयुक्त है तथा यह शिक्षा पूरे युग तथा दुनिया के समस्त इंसानों के लिए है और क़ुर्आन करीम से पहले नाज़िल होने वाली समस्त शिक्षाएँ जो विभिन्न नबियों पर उतरीं, वे सामयिक तथा उस ज़माने की आवश्यकता के अनुसार थीं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसकी व्याख्या के लिए यह भी ऐलान फ़रमाया कि इससे यह साबित होता है कि आँहज़रत स. की नियुक्ति का उद्देश्य भी पूरा हो गया तथा आप स. ही वे सम्पूर्ण एवं अन्तिम नबी हैं जिन पर यह उच्चतम स्तर की शरीअत अवतरित हुई। आपत्ति कर्ता आपत्तियाँ करते हैं कि जब यह आस्था है तथा क़ुर्आन करीम को अन्तिम शरीअत और आँहज़रत स. को अन्तिम नबी मानते हैं तो फिर आप अलै. के दावों का क्या औचत्य है तथा आप अलै. के इस ज़माने में आने की आवश्यकता ही क्या थी? तो इसका उत्तर आप अलै. ने एक स्थान पर इस प्रकार भी बयान फ़रमाया है कि यदि तुम इस्लाम की शिक्षानुसार कर्म कर रहे होते तो फिर ठीक है मेरे आने की कोई आवश्यकता नहीं थी परन्तु ज़मान की साधारणतः तथा विशेषकर मुसलमानों की अपनी अवस्था इस बात की घोषणा कर रही है कि किसी अध्यापक की आवश्यकता है।

आप अलै. ने अपने लिट्रेचर, लेखों तथा पुस्तकों में हर स्थान पर यह फ़रमाया है कि मैं आँहज़रत स. की ग़ुलामी में आप स. की शरीअत तथा दीन एवं क़ुर्आन की शिक्षाओं को दुनिया में फैलाने के लिए आया हूँ। यही काम है जो अहमदिया जमाअत आप अलै. के दिए हुए लिट्रेचर तथा आप अलै. की बयान की हुई क़ुर्आन की व्याख्या के अनुसार कर रही है तथा इस बात पर हर अहमदी को विचार करना चाहिए कि इस उद्देश्य को हम किस सीमा तक पूरा कर रह हैं। सामूहिक दृष्टि से तो एक प्रोग्राम हैं तथा हो रहे हैं किन्तु व्यक्तिगत रूप में भी होने चाहिएँ। अतः हमारी बैअत का उद्देश्य तभी पूरा होगा जब हम इस उद्देश्य को सम्मुख रखेंगे। इसके लिए हमें क़ुर्आन करीम को पढ़ने तथा समझने की ओर सदैव ध्यान रखना चाहिए। इसके लिए अति उत्तम साधन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकें एवं उपदेश हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- क़ुर्आन करीम की सुन्दरता एवं विशेषताएँ मैं कुछ समय से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कथनों की रौशनी में बयान कर रहा हूँ। आज भी क़ुर्आन करीम की सम्पूर्णता के विषय में आप अलै. के उपदेश शिक्षा की सम्पूर्णता पर पेश करूँगा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- दस बैअत की शर्तों में भी यह बात शामिल है कि क़ुर्आन करीम की हुकूमत को पूर्णत्या अपने सिर पर क़बूल करूँगा। अतः यदि हममें से हर एक इस रमज़ान में इस निर्देश के अनुसार कर्म करने का निर्णय कर ले तो न केवल हम अपनी रूहानियत में उन्नति करने वाले होंगे अपितु हमारा समाज भी जन्नत की उपमा वाला समाज बन जाएगा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने हज़रत मसीह मौऊद अलै. के हवाले से फ़रमाया कि जो कुछ मानव प्रकृति में चरम सीमा तक बिगाड़ हो सकता है तथा जितनी गुमराही एवं बुरे कर्मों में वे आगे से आगे बढ़ सकते हैं उन समस्त बुराईयों का क़ुर्आन करीम के द्वारा सुधार किया गया है। इस लिए ऐसे समय पर उसने क़ुर्आन करीम को नाज़िल

किया जब मानव जाति में ये सारी बुराईयाँ पैदा हो गईं थीं तथा धीरे धीरे मानवीय स्थिति हर एक आस्था एवं बुरे कर्म में लिप्त हो चुकी थी तथा यही अल्लाह की हिकमत चाहती थी कि ऐसे समय पर इस सम्पूर्ण कलाम का अवतरण हो, क्यूँकि बुराईयों के जन्म लेने से पहले ऐसे लोगों को इन दोषों एवं बुरी आस्थाओं की सूचना देना कि वे इनसे पूर्णतः अपरिचित हैं, उनके गुनाहों की ओर स्वयं झुकाव पैदा करने का काम देता है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि अतएव ज्ञान एवं विवेक वाले, एक साधारण व्यक्ति के बराबर नहीं हो सकते। जो कलाम ख़ुदा का कलाम हो उसका मानवीय कलाम से उच्चतर होना आवश्यक है। अल्लाह का ज्ञान कदाचित मानवीय कलाम के समान नहीं हो सकता। अतः क़ुर्आन करीम का हर एक दृष्टि से सम्पूर्ण होने का दावा है तथा कोई इसके मुक़ाबले पर न कभी हुआ है और न हो सकता है। जिन्होंने इस पवित्र कलाम का आज्ञा पालन किया है उन्हीं में इसके प्रभाव प्रकट हो सकते हैं। अतः यह भी क़ुर्आन की शिक्षा की विशेषता है कि इसके अनुसार कर्म करने वाले हो मूल्यवान बरकतों को प्राप्त करने वाले हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि फ़ुर्क़ान मजीद ने अपनी सुगमता एवं समृद्धता को सत्यता एवं यथार्थ आवश्यकता की व्यवस्था से अवगत किया है। समस्त दीन की सच्चाईयों को अपनी परिधि में लेकर दिखाया है। इसमें हर एक विरोधी के लिए खुली खुली सच्चाईयाँ भरी पड़ी हैं। जिन बातों में बिगाड़ देखा उन्हीं के सुधार के लिए ज़ोर मारा है। विभिन्न प्रकार की बीमारियों का इलाज लिखा है। झूठे धर्मों के हर एक भ्रम को मिटाया है, हर एक आपत्ति का जवाब दिया है। कोई सच्चाई ऐसी नहीं जिसको बयान नहीं किया। कोई कलमा अनावश्यक नहीं लिखा। कोई बात नहीं जो अवसर से हट कर बयान की हो। कोई शब्द व्यर्थ बयान नहीं हुआ। समृद्ध भाषा को इस कमाल तक पहुंचाया कि उसका ज्ञान पहले वालों तथा अन्त मं आने वालों तक के लिए इस किताब में भर दिया। इसकी शिक्षा ऐसी है जिसकी व्याख्या हर ज़माने के अनुसार ज्ञान देती है। क्या कभी किसी ने ऐसी किताब देखी है जो थोड़ से शब्दों में ज्ञान का सागर बहा दे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हर धर्म को चेलेंज दिया कि आओ इसकी विशेषताएँ तुम्हें दिखाऊँ और आज तक किसी ने इस चनातो का जवाब नहीं दिया। इसके बावजूद हम अहमदियों पर अनादर करने का आरोप लगाया जाता है। फ़रमाया कि हमारी दृष्टि में मोमिन वही है जो क़ुर्आन करीम का सम्पूर्ण अनुकरण करे।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने फ़रमाया कि मुक्ति के लिए अल्लाह तआला ने बार बार बयान फ़रमाया है कि सबसे पहले अल्लाह तआला को एक अकेला समझे, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सच्चा नबी माने, क़ुर्आन करीम को अल्लाह की किताब समझे। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने क़ुर्आन की वह्यी की शान के विषय में फ़रमाया कि सुनो ख़ुदा की धिक्कार है उन पर जो दावा करें कि वे क़ुर्आन के जैसी किताब ला सकते हैं। क़ुर्आन करीम चमत्कार है जिसके बराबर कोई इंसान और जिन्न नहीं ला सकता तथा इसमें वे ब्रह्मज्ञान एवं विशेषताएँ जमा हैं जिन्हें मानवीय ज्ञान जमा नहीं कर सकता।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने फ़रमाया- यदि मेरे साथ कोई निशान, समर्थन शामिल न होता, यदि मैंने क़ुर्आन करीम से अलग हट कर रास्ता निकाला होता अथवा कोई बात इसमें अपनी ओर से शामिल की होती या निरस्त की होती अथवा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अलग कोई राह निकाली होती तो लोगों की आपत्ति उचित होती कि यह व्यक्ति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दुश्मन और क़ुर्आन का दुश्मन है। अब मैंने न कोई बदलाव क़ुर्आन में किया तथा न पहली शरीअत को काइ मात्रा बदली बल्कि मैं क़ुर्आन

तथा क़ुर्आन के आदेशों की और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र धर्म की सेवा के लिए तत्पर हूँ।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलै. का दावा है, जिस पर हम विश्वास रखते हैं कि आप अलै. के द्वारा ही क़ुर्आन करीम को शिक्षाएँ हम तक पहुंची हैं और आप अलै. ने हमें वास्तविक ज्ञान प्रदान किए हैं। उन लोगों को विचार करना चाहिए कि जमाअत पर आरोप लगाते हैं। ये लोग जो बाज़ (रुक जाना) नहीं आ रहे हैं अल्लाह तआला इन्हें पकड़े बिना नहीं छोड़ेगा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने हज़रत मसीह मौऊद अलै. के लेखों से क़ुर्आन करीम के न्याय स्थापित करने के विषय में आदेशों पर प्रकाश डाला और फ़रमाया कि ये नियम दुनिया के अमन की ज़मानत हैं। सांसारिक युद्धों में लिप्त राष्ट्र इस नियम को समझ लें तो शांति स्थापित हो सकती है। यदि न्याय स्थापित नहीं करेंगे तो निवाश निश्चित है।

क़ुर्आन करीम की सम्पूर्ण शिक्षा का ऐलान करके हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने यह घोषणा फ़रमाई कि यदि क़ुर्आन के मुक़ाबले पर कोई सच्चाई जो इसमें मौजूद न हो, वह दिखा दे अथवा कोई सच्चाई जो किसी अन्य किताब में इससे अच्छी बयान हुई हो, हमें दिखा दे तो हम मृत्यु दंड स्वीकार करने के लिए तय्यार हैं।

आज क़ुर्आन ही दुनिया में एक अकेला ख़ुदा का कलाम है जिसमें एकेश्वरवाद तथा अल्लाह तआला की प्रतिष्ठा तथा उसके एक अकेला होने की आस्था सम्पूण रूप मं मौजूद है और क़ुर्आन ख़ुदा पर कोई आरोप नहों लगाता तथा जबरन कोई शिक्षा नहीं मनवाता तथा लोगों के कथनी करनी में जो बिगाड़ हैं उनका सुधार करता है तथा हर उपद्रव की रोक थाम उसी प्रकार करता है जिस प्रकार वह फैला होता है।

हुज़ूरे अनवर ने दुआ की, कि अल्लाह हमें क़ुर्आन को सही रूप मे पढ़ने, समझने तथा अपनी जीवन शैलियों में लागू करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और रमज़ान के बाद भी हम क़ुर्आन से ऐसे ही लाभान्वित होने वाले हों जैसे हम रमज़ान में प्राप्त करते हैं।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने रमज़ान में दुआओं की ओर ध्यान दिलाते हुए फ़रमाया कि जमाअत के विरोधियों के उपद्रव से बचने के लिए विशेष रूप से दुआएँ करें। अल्लाह तआला हर एक उपद्रवी के हाथ को रोके तथा उनकी पकड़ के सामान फ़रमाए तथा दुनिया की सामान्य स्थिति और फ़लिस्तीन के मुसलमानों के लिए भी विशेष दुआओं की प्रेरणा दी कि अल्लाह तआला उनको दुष्टों के अत्याचार से बचाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131